No of Questions : 30

No of Pages : 3

नामांक

माध्यमिक परीक्षा, 2019

सामाजिक विज्ञान

मॉडल पेपर 5

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5.

प्रश्न संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	उत्तर की शब्द सीमा
1-10	1	20 शब्द
11-19	2	40 शब्द
20-26	4	100 शब्द
27, 29	6	150 शब्द
28	7	150 शब्द

6. प्रश्न संख्या 30 मानचित्र कार्य से संबंधित है और 5 अंक का है।
7. प्रश्न संख्या 24 व 27 से 29 तक में आंतरिक विकल्प है।

---

1. धम्म महामात्र के कोई दो कार्य बताइए। 1

2. सैयद वंश की स्थापना कब की गई? इसके संस्थापक का नाम बताइए। 1

3. लोकतंत्र के कोई दो दोष बताइए। 1

4. स्वतंत्र भारत के पहले बंदरगाह का नाम बताइए। 1

5. आर्थिक नियोजन से क्या अभिप्राय है? 1

6. मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) किसके द्वारा विकसित किया गया था? 1

7. सर्वप्रथम किस देश द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक नियोजन की तकनीक अपनायी गयी थी? 1

8. गरीबी उन्मूलन हेतु सरकार ने गरीबी रेखा से नीचे लोगों के लिए कौनसी नीति अपनायी? 1

9. भारत में मुद्रास्फीति के कोई दो कारण बताइए। 1

www.rbse.online

10. जन्मदर व मृत्युदर को स्पष्ट कीजिए। 1

11. राज्यपाल कौन होता है? उसे कैसे नियुक्त किया जाता है? 2

12. दामोदर घाटी परियोजना का क्रियान्वयन क्यों किया गया? 2

13. खरीफ की फसल से आप क्या समझते हैं? 2

14. खनिज के प्रमुख प्रकारों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए। 2

15. भारत में सूती वस्त्र उद्योग के विकेन्द्रीकरण के कारकों को समझाइये। 2

16. लिंग अनुपात से आप क्या समझते हैं? 2

17. रेल परिवहन की अपेक्षा सड़क परिवहन के महत्त्व बताइए। 2

18. नागरिकों के लिए सड़क सुरक्षा के महत्व को समझना क्यों आवश्यक हैं? 2

19. भस्मीकरण के बारे में लिखिये। 2

20. मौर्य साम्राज्य की केन्द्रीय प्रशासन व्यवस्था को स्पष्ट कीजिए। 4

21. राव शेखा के बारे में आप क्या जानते हैं? 4

22. औद्योगिक क्रांति के परिणामों की विवेचना कीजिए। 4

23. लोकतंत्र की सफलता के लिए कोई तीन आवश्यक शर्तों का उल्लेख कीजिए। 4

24. जीवन की निम्न गुणवत्ता किस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था के अविकसित स्वरूप को व्यक्त करती है? 4

अथवा

24. व्यावसायिक संरचना, वित्तीय आधारभूत संरचना, सामाजिक आधारभूत संरचना (जीवन की गुणवत्ता) और भारतीय अर्थव्यवस्था की जनसांख्यिकीय विशेषताओं में हुए परिवर्तनों का एक विवरण दीजिए।

25. भारतीय रिजर्व बैंक अन्य बैंकों की गतिविधियों पर किस तरह नजर रखता है? यह जरूरी क्यों हैं? 4

26. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 में उपभोक्ता को दिए गए तीन अधिकारों को स्पष्ट कीजिए। 4

27. राजस्थान में किसान आन्दोलनों का वर्णन कीजिए। 6

अथवा

27. भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में भारत छोड़ो आन्दोलन की भूमिका का वर्णन कीजिए।

28. मंत्रिमण्डल के गठन एवं उसकी शक्तियों की विवेचना कीजिए। 7

अथवा

28. लोकसभा तथा राज्यसभा के मध्य तुलना कीजिए एवं दोनों का पारस्परिक संबंध बताइए।

29. राज्य मंत्रिपरिषद् के गठन का वर्णन कीजिए। 6

अथवा

29. प्रधानमंत्री के कार्य एवं अधिकारों का वर्णन कीजिए?

30. 1. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को अंकित कीजिए– 5

(a) अमृतसर

(b) चंपारण

2. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्न अंकित कीजिए–

(a) मरुस्थलीय मृदा का क्षेत्र

(b) गौंडवाना कोयला क्षेत्र

(c) मुम्बई बन्दरगाह

□□□□□□□

www.rbse.online

राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019
10वीं कक्षा
सामाजिक विज्ञान
मॉडल पेपर 5

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5.

प्रश्न संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	उत्तर की शब्द सीमा
1-10	1	20 शब्द
11-19	2	40 शब्द
20-26	4	100 शब्द
27, 29	6	150 शब्द
28	7	150 शब्द

6. प्रश्न संख्या 30 मानचित्र कार्य से संबंधित है और 5 अंक का है।
7. प्रश्न संख्या 24 व 27 से 29 तक में आंतरिक विकल्प है।

---

1. धम्म महामात्र के कोई दो कार्य बताइए। 1

उत्तर :
धम्म महामात्र के दो कार्य निम्न थे-
1. जनता में धर्म का प्रचार-प्रसार करना।
2. कारावास से कैदियों को मुक्ति दिलाना या उनकी सजा को कम करना।

2. सैयद वंश की स्थापना कब की गई? इसके संस्थापक का नाम बताइए। 1

उत्तर :
सैयद वंश की स्थापना 1414 ई. में की गई। इस वंश का संस्थापक खिज्र खाँ था।

3. लोकतंत्र के कोई दो दोष बताइए। 1

उत्तर :
लोकतंत्र के चार दोष निम्न हैं-
1. राजनीतिक दलों क दुष्प्रभाव।
2. अनुत्तरदायी शासन प्रणाली।

4. स्वतंत्र भारत के पहले बंदरगाह का नाम बताइए। 1

उत्तर :
स्वतंत्र भारत का पहला बंदरगाह कांडला (गुजरात) है।

5. आर्थिक नियोजन से क्या अभिप्राय है? 1

उत्तर :
आर्थिक नियोजन वह प्रक्रिया है जिसमें केंद्रीय नियोजन सत्ता, अर्थव्यवस्था के संसाधनों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर आर्थिक निर्णय करती है।

6. मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) किसके द्वारा विकसित किया गया था? 1

उत्तर :
मानव विकास सूचकांक पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब उल हक द्वारा यूएनडीपी के लिए विकसित किया गया था।

7. सर्वप्रथम किस देश द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक नियोजन की तकनीक अपनायी गयी थी? 1

उत्तर :

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

सर्वप्रथम सोवियत संघ द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक नियोजन की तकनीक अपनायी गयी थी।

8. गरीबी उन्मूलन हेतु सरकार ने गरीबी रेखा से नीचे लोगों के लिए कौनसी नीति अपनायी? 1

उत्तर :
सरकार ने गरीबी उन्मूलन के लिए गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने वाले परिवारों का चयन कर उन्हें जीवन-यापन हेतु आवश्यक वस्तुएँ तथा सेवाएँ कम मूल्य या मुफ्त में प्राप्त करवाने की नीति अपनायी।

9. भारत में मुद्रास्फीति के कोई दो कारण बताइए। 1

उत्तर :
भारत में मुद्रास्फीति के चार कारण निम्न हैं-
1. सरकारी व्यय में वृद्धि होना।
2. कृषि उत्पादों का न्यूनतम समर्थन मूल्य।

10. जन्मदर व मृत्युदर को स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :
1. **जन्मदर** – प्रति हजार व्यक्तियों में एक वर्ष में जन्में जीवित बच्चों की संख्या को जन्म दर कहते हैं।
2. **मृत्युदर** – प्रति हजार व्यक्तियों में एक वर्ष में मरने वालों की संख्या को मृत्यु दर कहा जाता है।

11. राज्यपाल कौन होता है? उसे कैसे नियुक्त किया जाता है? 2

उत्तर :
राज्यपाल राज्य की कार्यपालिका का प्रमुख होता है। संविधान के अनुच्छेद 155 के अनुसार राज्य के राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रत्यक्ष रूप से की जाती है।

12. दामोदर घाटी परियोजना का क्रियान्वयन क्यों किया गया? 2

उत्तर :
दामोदर नदी घाटी परियोजना भारत की प्रथम नदी घाटी परियोजना है जो कि दामोदर नदी पर विकसित की गई है। पश्चिम बंगाल व झारखंड के नदी घाटी का आर्थिक विकास कर स्थानीय निवासियों के जीवन-स्तर में सुधार लाने तथा इस नदी से होने वाली विनाशलीला व जन-धन की हानि से बचने के लिए इस योजना का क्रियान्वयन किया गया है।

13. खरीफ की फसल से आप क्या समझते हैं? 2

उत्तर :
खरीफ की फसलें विभिन्न क्षेत्रों में मानसून (जून-जूलाई) के आगमन के साथ बोई जाती हैं। इन्हें अक्टूबर-नवम्बर में काट लिया जाता है। इस ऋतु में बोई जाने वाली मुख्य फसलों में चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, तुर (अरहर), मूँग, उड़द, कपास, जूट, मूँगफली और सोयाबीन सम्मिलित हैं।

14. खनिज के प्रमुख प्रकारों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए। 2

उत्तर :
खनिज संसाधनों के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं-
1. **धात्विक खनिज** – वे खनिज जिनमें धातु पाई जाती है, धात्विक खनिज कहलाते हैं। जैसे- लोहा, तांबा, सोना, चांदी आदि।
2. **अधात्विक खनिज** – वे खनिज जिनमें धातु नहीं पाई जाती, अधात्विक खनिज कहलाते हैं। जैसे- गन्धक, पोटाश, जिप्सम, ग्रेफाइट आदि।
3. **ईंधन खनिज** – वे खनिज जिनसे हमें ऊर्जा प्राप्त होती है, ऊर्जा खनिज या ईंधन खनिज कहलाते हैं। जैसे- कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, आणविक खनिज।

15. भारत में सूती वस्त्र उद्योग के विकेन्द्रीकरण के कारकों को समझाइये। 2

उत्तर :
सूती वस्त्र उद्योग का विकास लम्बे रेशे वाली कपास की उपलब्धता, ऊर्जा संसाधन तथा परिवहन के साधनों की उपलब्धता पर निर्भर है। भारत में मूल रूप से यह उद्योग कच्चे माल के उत्पादक क्षेत्रों में ही केन्द्रीकृत था परन्तु बाजार, जल-विद्युत शक्ति व परिवहन के साधनों के विकास आदि कारकों के कारण वर्तमान समय में भारत का सबसे बड़ा विकेन्द्रीकृत उद्योग बन गया है।

16. लिंग अनुपात से आप क्या समझते हैं? 2

उत्तर :
किसी भी देश के सामाजिक विकास के लिए लिंग संरचना का ज्ञान आवश्यक है। प्रति हजार पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या के अनुपात को लिंग अनुपात कहा जाता है। भारत में लिंग अनुपात निरंतर कम होता जा रहा है। सन् 1901 में यह अनुपात 972 प्रति हजार पुरुष था जबकि 2011 में यह संख्या घट कर 940 हो गई है। भारत में केवल केरल राज्य में ही स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है। यहां एक हजार पुरुषों के पीछे 1084 स्त्रियां हैं।

17. रेल परिवहन की अपेक्षा सड़क परिवहन के महत्त्व बताइए। 2

उत्तर :
रेल परिवहन की अपेक्षा सड़क परिवहन की बढ़ती महत्ता निम्न कारणों से है-
1. रेलवे लाइन की अपेक्षा सड़कों की निर्माण लागत बहुत कम है।
2. अपेक्षाकृत उबड़-खाबड़ व विच्छिन्न भू-भागों पर सड़कें बनाई जा सकती है।
3. अधिक बल प्रवणता (ढाल) तथा पहाड़ी क्षेत्रों में भी सड़कें निर्मित की जा सकती है।
4. अपेक्षाकृत कम व्यक्तियों, कम दूरी व कम वस्तुओं में परिवहन में सड़कें मितव्ययी है।

18. नागरिकों के लिए सड़क सुरक्षा के महत्व को समझना क्यों आवश्यक हैं? 2

उत्तर :
नागरिकों के लिए सड़क सुरक्षा के महत्व को समझना निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है-
1. नशे की हालत में गाड़ी चलाने के कारण अनेक लोगों की जान चली जाती है।

सभी गुरुजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

2. मोबाइल फोन की घंटी और गाड़ी में बच्चों का अनावश्यक शोर ड्राइवर के ध्यान को भंग कर सकता है जो कि सड़क दुर्घटना का कारण बन सकता हैं
3. सड़क क्रोधोन्माद यानि क्रोध में गाड़ी चलाना। ये भारत में सड़क दुर्घटनाओं के मुख्य कारणों में से एक है। इसलिये सड़क पर सुरक्षा की दृष्टि से क्रोध को दूर रखना आवश्यक है।

19. भस्मीकरण के बारे में लिखिये। 2

उत्तर :

भस्मीकरण प्रमुख सामान्य थर्मल प्रक्रिया है। इसमें कचरे का दहन ऑक्सीजन की उपस्थिति में किया जाता है। भस्मीकरण के पश्चात कचरा कार्बन डाइ ऑक्साइड, पानी की भाप तथा राख में परिवर्तित हो जाता है। यह तरीका ऊर्जा की प्राप्ति का साधन है। इसका उपयोग बिजली बनाने के लिए ऊष्मा देने के लिए किया जाता है।

20. मौर्य साम्राज्य की केन्द्रीय प्रशासन व्यवस्था को स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर :

मौर्य साम्राज्य की केन्द्रीय प्रशासन व्यवस्था – मौर्य साम्राज्य में राजतंत्रीय व्यवस्था के अनुसार, राजा प्रशासन का प्रधान एवं सर्वोच्च सत्ताधारी होता था। मंत्रियों, प्रशासनिक एवं सैनिक अधिकारियों की नियुक्ति उसी के द्वारा की जाती थी। वह न्याय का भी प्रधान था एवं प्रशासनिक कानून बनाता था। राजा की सहायता सचिव अथवा मंत्री करते थे। इनका काम राजा को सलाह देना था। राजा को प्रशासन में सहयोग देने के लिए 18 पदाधिकारियों का एक समूह होता था जिसे तीर्थ कहा जाता था। ये 'महामात्य' भी कहे जाते थे। सबसे महत्त्वपूर्ण तीर्थ–मंत्री, पुरोहित, सेनापति एवं युवराज होते थे। मंत्रियों की नियुक्ति हेतु इनके चरित्र को जाँचा–परखा जाता था, जिसे उपधा परीक्षण कहते थे। मंत्रियों से नीचे द्वितीय श्रेणी के पदाधिकारी थे, जिन्हें विभागाध्यक्ष कहा जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 26 विभागाध्यक्षों का उल्लेख हैं, यथा– सन्निधाता (कोषाध्यक्ष), सीताध्यक्ष (राजकीय, कृषि विभाग का अध्यक्ष), पण्याध्यक्ष (व्यापार वाणिज्य का अध्यक्ष), सूत्राध्यक्ष (कताई, बुनाई का अध्यक्ष), लूना अध्यक्ष (बूचड़खाना), विवीताध्यक्ष (चारागाह), लक्षणाध्यक्ष (मुद्रा जारी करना), मुद्राध्यक्ष (पासपोर्ट अधिकारी), पौतवाध्यक्ष (मापतोल का अध्यक्ष), बंधनागाराध्यक्ष (जेल का अध्यक्ष) आटविक (वन विभाग का अध्यक्ष) आदि।

'युक्त' तथा 'उपयुक्त' महामात्य तथा अध्यक्षों के नियंत्रण में निम्न स्तर के कर्मचारी कार्य करते थे।

21. राव शेखा के बारे में आप क्या जानते हैं? 4

उत्तर :

महाराव शेखा का जन्म 24 सितम्बर 1433 ई. को हुआ। इनके पिता का नाम मोकल एवं माता का नाम निर्वाण था। उनकी पत्नी का नाम गंगा कुमारी था। राव मोकल आमेर (जयपुर) राज्य के अन्तर्गत आने वाले नान के शासक थे। 1445 ई. में 12 वर्ष की उम्र में शेखा ने अपने पिता का उतरदायित्व संभाला। आमेर के शासक उदयकरण ने शेखा को महाराव की उपाधि प्रदान की थी। 16 वर्ष की उम्र में मुल्तान, सेवार, नगरचल के सांखला राजपूतों पर अचानक आक्रमण कर राव शेखा ने विजय प्राप्त की। 1473 ई. से 1477 ई. में रावशेखा ने पन्नी पठानों की सहायता से नोप सिंह जाटू से दादरी और अन्य जाटू राजपूतों से भिवानी पर विजय प्राप्त की। शेखा का पहला सफल अभियान इस्तर खान से हांसी, हेदाखान कायमखानी से हिसार को जीतकर अपने राज्य की सीमा का विस्तार करना था। 1449 ई. में इसने आमेरसर को अपने राज्य की राजधानी बनाया। आमेरसर में शेखा ने भगवान जगदीश का मंदिर तथा 1477 ई. में शिकार गढ़ का किला बनवाया।

1488 ई. में रालावता नामक स्थान पर इसकी मृत्यु हुई जहाँ उसकी छतरी बनी हुई हैं। महाराव शेखा ने अपने जीवन काल में 52 युद्ध लड़े। उसे जयपुर के कछवाहा वंश के उपवर्ग **शेखावत** का संस्थापक माना जाता है।

22. औद्योगिक क्रांति के परिणामों की विवेचना कीजिए। 4

उत्तर :

औद्योगिक क्रांति के परिणाम निम्नलिखित है–

1. **आर्थिक परिणाम –** उत्पादन एवं वाणिज्य में असंतुलित वृद्धि हुई तथा आर्थिक संतुलन बिगड़ गया। ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा नगरों का अत्यधिक विकास हुआ। कुटीर उद्योगों का विनाश हुआ। राष्ट्रीय बाजारों को राज्य द्वारा संरक्षण मिला तथा औद्योगिक पूंजीवाद का विकास हुआ।
2. **राजनैतिक परिणाम –** राजनीति में लोकतंत्र की माँग में वृद्धि हुई तथा मध्यम वर्ग की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का उदय हुआ। औद्योगिक क्रांति से औपनिवेशिक स्पर्धा प्रारम्भ हो गई। श्रमिक संगठित हुए और आंदोलनों के माध्यम से अपनी माँगों को मनवाने लगे।
3. **सामाजिक परिणाम –** नये सामाजिक वर्ग का उदय हुआ। नैतिक मूल्यों में गिरावट आई, संयुक्त परिवार प्रथा में बिखराव हुआ। नयी संस्कृति का जन्म हुआ तथा मानवीय संबंधों में गिरावट आई। शहरों में मजदूरों की संख्या बढ़ने से गन्दी बस्तियों की समस्या बढ़ी।
4. **वैचारिक परिणाम –** आर्थिक उदारवाद का स्वागत किया गया और समाजवाद ने जन्म लिया।

23. लोकतंत्र की सफलता के लिए कोई तीन आवश्यक शर्तों का उल्लेख कीजिए। 4

उत्तर :

लोकतंत्र की सफलता के लिए तीन आवश्यक शर्तें निम्नलिखित हैं–

1. **आर्थिक समानता की स्थापना –** लोकतंत्र के सफल संचालन के लिए केवल इतना ही आवश्यक नहीं है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था शक्तिशाली हो, बल्कि यह भी जरूरी है कि राज्य में यथासंभव आर्थिक समानता हो अर्थात् गरीबी व अमीरी के बीच चौड़ी खाई न हो। यह तब ही सम्भव है जब देश में बड़ी मात्रा में मध्यवर्ग की उपस्थिति हो।
2. **सामाजिक न्याय की स्थापना –** लोकतंत्र की सफलता के लिए जरूरी है कि व्यक्तियों के मध्य धर्म, जाति, भाषा, रंग, नस्ल, लिंग, जन्म आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाये। इस प्रकार जब समाज में सभी व्यक्तियों को समान स्थिति प्राप्त होती है, तो उनके बीच भावनात्मक एकता भी स्थापित होती है और सामाजिक लोकतन्त्र की स्थापना होती है।
3. **शिक्षित व जागरूक जनता –** लोकतंत्र की सफलता के लिए शिक्षा एक अपरिहार्य शर्त है। शिक्षित व्यक्ति ही अपनी तथा समाज

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

की परेशानियों को समझ सकता है, अपने अधिकार एवं कर्त्तव्य का पालन कर सकता है तथा जनमत को स्वस्थ व प्रभावशाली बना सकता है।

24. जीवन की निम्न गुणवत्ता किस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था के अविकसित स्वरूप को व्यक्त करती है? 4

उत्तर :

जीवन की निम्न गुणवत्ता– शिक्षा और स्वास्थ्य जीवन की गुणवत्ता के दो सबसे प्रभावी निर्धारक और संकेतक हैं। ये मानव कल्याण के अभिन्न अंग है। इनके अभाव में आय का कोई अर्थ नहीं रहता है अर्थात आय अर्थहीन हो जाती है। जब लोगों में ज्ञान प्राप्ति तथा स्वस्थ रूप से जीने की क्षमता होती है तभी वह आय का उपयोग करने में सक्षम हो पाते हैं। भारत में शिक्षा का स्तर अत्यन्त कमजोर है जो निम्न साक्षरता दर से प्रतिबिम्बित होता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत थी। जनसंख्या का लगभग एक चौथाई भाग वर्तमान में निरक्षर है। स्वास्थ्य–स्तर को जन्म के समय जीवन–प्रत्याशा से मापा जा सकता है। विश्व बैंक के अनुसार भारत में वर्ष 2014 में जन्म के समय जीवन–प्रत्याशा 68 वर्ष थी। यह जापान तथा चीन की तुलना में अत्यधिक कम है। शिक्षा तथा स्वास्थ्य का निम्न स्तर भी भारतीय अर्थव्यवस्था के अविकसित स्वरूप को व्यक्त करता है।

अथवा

24. व्यावसायिक संरचना, वित्तीय आधारभूत संरचना, सामाजिक आधारभूत संरचना (जीवन की गुणवत्ता) और भारतीय अर्थव्यवस्था की जनसांख्यिकीय विशेषताओं में हुए परिवर्तनों का एक विवरण दीजिए।4

उत्तर :

1. **व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन –** कृषि में कार्यरत कार्यबल (श्रमबल) का प्रतिशत 72 प्रतिशत से घटाकर 49 प्रतिशत कर दिया गया है। सेवा क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है।
2. **वित्तीय आधारभूत संरचना में परिवर्तन –** बिजली उत्पादन करने की क्षमता दोगुनी हो गई है। राष्ट्रीय राजमार्ग की लंबाई 4 लाख किलोमीटर से बढ़कर 50 लाख किलोमीटर हो गई है। बैंकिंग और बीमा सेवाओं का विस्तार किया गया है।
3. **सामाजिक आधारभूत संरचना में परिवर्तन –** आर्थिक विकास के कारण स्कूलों, अस्पतालों आदि जैसे सामाजिक बुनियादी ढाँचे के कारण साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत हो गई है, 2014 में जीवन प्रत्याशा 68 वर्ष तक बढ़ी है।
4. **जनसांख्यिकीय विशेषताओं में परिवर्तन –** जनसंख्या के विकास की दर की रोकथाम की गई है। यह सन् 2011 में 24.8 प्रतिशत से घटकर सन् 1961 में 17.64 प्रतिशत हो गई है।

25. भारतीय रिजर्व बैंक अन्य बैंकों की गतिविधियों पर किस तरह नजर रखता है? यह जरूरी क्यों हैं? 4

उत्तर :

भारतीय अर्थव्यवस्था में भारतीय रिजर्व बैंक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यह सभी अन्य बैंकों की कार्यप्रणाली पर नजर रखता है। इसलिए इसे बैंकों का बैंक भी कहा जाता है।

आर.बी.आई कर्जों के औपचारिक स्रोतों की गतिविधियों को देखता है। यह नजर रखता है कि सभी बैंक वास्तव में नकद शेष बनाए हुए हैं या नहीं। वह यह भी देखता है कि बैंक केवल लाभ कमाने वाली इकाइयों और व्यापारियों को ही तो ऋण मुहैया नहीं करा रहे बल्कि छोटे किसानों, छोटे उद्योगों, छोटे कर्जदारों इत्यादि को भी ऋण दे रहे हैं। समय–समय पर बैंको को भारतीय रिजर्व बैंक को यह जानकारी देनी पड़ती है कि वे कितना और किनको ऋण दे रहे हैं और उसकी ब्याज दरें क्या हैं।

26. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 में उपभोक्ता को दिए गए तीन अधिकारों को स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर :

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 में उपभोक्ता को दिए गए तीन अधिकार निम्न हैं–

1. **उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार –** उपभोक्ता को अपने अधिकारों की शिक्षा मिलनी चाहिए तथा वह अपने हितों के संरक्षण के लिए कानूनी अधिकार भी प्राप्त करता है। उसे उत्पादकों तथा वस्तु निर्माण के दुराचरण या लापरवाही से निपटने के लिए कानून का पता होना चाहिए जिससे वह आगे और न ठगा जा सके।
2. **सुरक्षा का अधिकार –** कुछ वस्तुएँ गंभीर आघात पहुँचा सकती हैं। ये वस्तुएँ हैं– प्रेशर कुकर, गैस सिलेण्डर, विद्युत की वस्तुएँ आदि। यदि इन वस्तुओं में कोई भी निर्माण की खराबी पाई जाती है तो उपभोक्ता के पास इन घातक खतरों के विरुद्ध संरक्षण के अधिकार प्राप्त हैं।
3. **सुनवाई का अधिकार –** प्रत्येक उपभोक्ता को सुने जाने का अधिकार प्रदान किया गया है। उसे यह विश्वास होना चाहिए कि उत्पादों और सेवाओं से सम्बन्धित उसकी शिकायतों तथा तकलीफ को सुना जाएगा तथा इस पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

27. राजस्थान में किसान आन्दोलनों का वर्णन कीजिए। 6

उत्तर :

राजस्थान में हुए प्रमुख किसान आन्दोलन निम्नलिखित है–

1. **बिजौलिया किसान आन्दोलन –** राजस्थान में संगठित जन–जागृति करने का श्रेय 'बिजौलिया किसान आन्दोलन' को जाता है। राव कृष्ण सिंह के समय बिजौलिया जागीर से भारी लगान के अलावा 84 प्रकार की लागतें तथा लाग–बेगारें ली जाती थीं। 1903 ई. में बिजौलिया के शासक कृष्णसिंह के द्वारा एक नया चँवरी कर लगाया गया (लड़की के ब्याह पर राजा को कर देना पड़ता था)। इसके विरोध में किसानों द्वारा आंदोलन किया गया। अतः चँवरी कर को समाप्त करना पड़ा। 1906 ई. में राव कृष्ण की मृत्यु के बाद पृथ्वीसिंह बिजौलिया का शासक बना। पृथ्वीसिंह ने जनता पर नया तलवार बँधाई कर लगाया। इसके विरोध में बिजौलिया की जनता ने विद्रोह कर दिया। आखिरकार 1922 ई. में सरकार ने किसानों की 35 लागतों को माफ कर दिया।
2. **सीकर किसान आन्दोलन –** जब सीकर के राव राजा कल्याण सिंह ने 25 से 50 प्रतिशत तक भू–राजस्व बढ़ा दिया, तो सीकर के किसानों ने आन्दोलन शुरू कर दिया। किसानों ने लगान देने से इन्कार कर दिया। पुलिस ने किसानों पर गोलियाँ चलाईं जिससे चार किसानों की मृत्यु हो गई। अन्त में 1935 के अन्त तक सीकर के किसानों की अधिकतर माँगें स्वीकार कर ली गई।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

3. **बेगूँ किसान आन्दोलन –** बिजौलिया किसान आंदोलन से प्रोत्साहित होकर बेगूँ के किसानों ने भी अत्यधिक लाग, बाग, बैठ, बैगार एवं लगान के विरोध में आन्दोलन करने का निर्णय लिया। दो वर्षों के संघर्ष के पश्चात बेगूँ के जागीरदार को किसानों के सामने झुकना पड़ा और उसने किसानों की माँगों को स्वीकार करते हुए उनसे समझौता कर लिया।
4. **बरड़ किसान आन्दोलन (बूँदी) –** बिजौलिया किसान आंदोलन से प्रेरित होकर बूँदी के किसानों ने 1922 ई. में राजस्थान सेवा संघ के कार्यकर्त्ता भँवरलाल सोनी के नेतृत्व में बरड़ किसान आंदोलन प्रारम्भ किया। अप्रैल, 1923 को डाबी में किसानों ने एक आमसभा का आयोजन कर आन्दोलन की रूपरेखा तैयार की, तब पुलिस अधिकारी के आदेश पर गोलियाँ चलीं जिसमें दो किसान शहीद हो गये। अन्त में 1927 के बाद यह आन्दोलन समाप्त हो गया।
5. **नीमूचणा किसान आंदोलन (अलवर) –** 1923–24 में अलवर में भू–राजस्व की नई दरें लागू कर दी गईं जिससे राजपूतों, ब्राह्मणों आदि में आक्रोश व्याप्त था। अलवर रियासत में जंगली सूअरों को अनाज खिलाकर पाला जाता था। ये सूअर किसानों की खड़ी फसलों को खा जाते थे। इन सबके विरोध में किसानों ने आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। मई, 1925 ई. में अलवर के किसानों ने आन्दोलन की रूपरेखा तैयार करने के लिए नीमूचणा गाँव में एक शान्तिपूर्ण आमसभा का आयोजन किया। जब यह सभा शान्तिपूर्ण चल रही थी तभी सेना ने गोलियाँ चला दी जिसमें सैकड़ों किसान शहीद हो गये एवं अनेक घायल हुए। महात्मा गाँधी ने इस नीमूचणा हत्याकाण्ड को जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड की संज्ञा दी थी तथा इसे 'Dyrism double distrilled' (दोहरी डायरशाही) की संज्ञा भी दी।

अथवा

27. भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में भारत छोड़ो आन्दोलन की भूमिका का वर्णन कीजिए। 6

उत्तर :

भारत छोड़ो प्रस्ताव– 8 अगस्त, 1942 ई. को **भारत छोड़ो** प्रस्ताव पास हुआ और 9 अगस्त की प्रातः काल से पहले ही गाँधीजी सहित काँग्रेस के समस्त बड़े नेता बन्दी बना लिये गये। समस्त प्रमुख कांग्रेसी नेताओं के अचानक गिरफ्तार कर लिए जाने के कारण जन साधारण गिरफ्तारी से बच गए। कांग्रेसी नेताओं के पास इस आन्दोलन के लिए कोई निर्धारित कार्यक्रम न था। जनता को केवल यह याद था कि महात्मा गांधी ने **करो या मरो** का मंत्र दिया, अतः सम्पूर्ण भारत में विद्रोह प्रारम्भ हो गए साथ ही यह आन्दोलन असंगठित रूप से शुरू हो गया। अंग्रेजों ने आरम्भ से ही दमनकारी नीति अपनायी तथा आन्दोलन को कुचलने के लिए 9 अगस्त को काँग्रेस पार्टी को भी अवैध घोषित कर दिया। काँग्रेस और काँग्रेसी नेताओं की सम्पत्ति जब्त कर ली गयी।

आन्दोलन का प्रसार– भारत छोड़ो आन्दोलन की कोई निश्चित योजना नहीं बनाई गई थी। गाँधीजी और अन्य नेताओं की गिरफ्तारी के बावजूद यह आन्दोलन फैलता गया। किसान और युवा इस आन्दोलन में बड़ी संख्या में शामिल हो गए। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई–लिखाई छोड़ कर आन्दोलन में कूद पड़े। देश भर में संचार तथा सरकारी संस्थानों पर हमले हुए। बहुत सारे इलाकों में लोगों ने अपनी सरकार का गठन कर लिया। आन्दोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने बर्बर दमन का रास्ता अपनाया। 1943 के अंत तक 90,000 से अधिक लोग गिरफ्तार कर लिए गए और लगभग 10,000 लोग पुलिस की गोली से मारे गए।

आन्दोलन का प्रभाव– भारत छोड़ो आन्दोलन के निम्नलिखित प्रभाव पड़े–

1. भारत छोड़ो आन्दोलन ने सिद्ध कर दिया था कि भारत की जनता अंग्रेजी शासन से मुक्ति चाहती है।
2. इस आन्दोलन में स्वतन्त्रता की भावनाएँ प्रबल हो गयी थीं।
3. इस आन्दोलन ने भारत के पक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय जनमत तैयार किया।
4. इंग्लैण्ड में विभिन्न दलों ने भारतीय समस्या पर गम्भीरता से विचार करना आरम्भ किया।
5. अंग्रेजों का भारत छोड़ना निश्चित हो गया। यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सशक्त अभियान था।

28. मंत्रिमण्डल के गठन एवं उसकी शक्तियों की विवेचना कीजिए। 7

उत्तर :

मंत्रिमण्डल का गठन– मंत्रिमण्डल के संगठन का अधिकार संविधान ने राष्ट्रपति को प्रदान किया है। मंत्रिमण्डल में प्रधानमंत्री तथा कुछ अन्य मंत्री होते हैं, जिनका चयन भारतीय संसद में से किया जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 75 के अनुसार प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाएगी। 91वें संविधान संशोधन (वर्ष 2003) द्वारा यह निर्धारित किया गया है कि केन्द्र में मंत्रियों की कुल संख्या लोकसभा के कुल सदस्यों की 15 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकेगी। व्यवहार में प्रधानमंत्री राष्ट्रपति को अपने दल के उन सदस्यों की एक सूची देता है, जिनको वह अपनी मंत्रिमण्डल में रखना चाहता है अथवा मंत्री बनाना चाहता है। इस सूची को राष्ट्रपति स्वीकार कर लेता है। इस प्रकार मंत्रिमण्डल का गठन पूर्ण हो जाता है। मंत्रिमण्डल में तीन प्रकार के मंत्री होते हैं–

1. केबिनेट स्तर के मंत्री।
2. राज्य मंत्री।
3. उपमंत्री।

1. **केबिनेट मंत्री –** ऐसे मंत्री को मंत्रिमण्डल की प्रत्येक बैठक में उपस्थित होने और भाग लेने का अधिकार है। अनुच्छेद 352 के अधीन आपात की उद्घोषणा के लिए सलाह प्रधानमंत्री और अन्य कैबिनेट मंत्री मिलकर देंगे। उल्लेखनीय है कि मूल संविधान में कैबिनेट शब्द का उल्लेख नहीं किया गया था, लेकिन 44वें संविधान संशोधन (1978) के द्वारा कैबिनेट शब्द को अनुच्छेद 352 में स्थान प्रदान किया गया है।
2. **राज्य मंत्री –** राज्यमंत्री सामान्यतः केबिनेट मंत्रियों के अधीन कार्य करते हैं। अनेक बार इन्हें विभागों का स्वतंत्र प्रभार भी सौंप दिया जाता है।
3. **उपमंत्री –** उपमंत्री मंत्रिमण्डल के कनिष्ठ सदस्य होते हैं जो विभागों के प्रमुख कैबिनेट या राज्यमंत्री के कार्यों में सहायता करते हैं।

मंत्रिमण्डल के कार्य एवं शक्तियाँ– मंत्रिमण्डल का गठन प्रधानमंत्री के परामर्श से राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है, परन्तु व्यावहारिक रूप में कार्यपालिका की वास्तविक शक्ति मंत्रिमण्डल में निहित होती है, राष्ट्रपति मंत्रिमण्डल के परामर्श के अनुसार अपनी शक्तियों का प्रयोग

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

करता है। भारत में मंत्रिमण्डल के प्रमुख कार्य एवं शक्तियाँ निम्नलिखित हैं।

1. **राष्ट्रीय नीति का निर्धारण करना –** मंत्रिमण्डल का सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य राष्ट्रीय नीतियों का निर्धारण करना है। मंत्रिमण्डल के द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि आंतरिक क्षेत्र में प्रशासन के विभिन्न विभागों के द्वारा और वैदेशिक क्षेत्र में दूसरे देशों के साथ संबंधों के विषय में किस प्रकार की नीति अपनाई जाएगी।
2. **कानून निर्माण पर नियंत्रण –** मंत्रिमण्डल द्वारा नीति का निर्धारण कर दिए जाने के पश्चात् उसके द्वारा ही कानून निर्माण का कार्यक्रम निश्चित किया जाता है।
3. **वित्तीय कार्य –** देश की आर्थिक नीति निर्धारित करने का उत्तरदायित्व भी मंत्रिमण्डल का ही होता है। बजट का निर्माण, नये कर लगाना तथा पुराने करों की दरों में बदलाव करना आदि मंत्रिमण्डल के प्रमुख कार्यों में सम्मिलित हैं। मंत्रिमण्डल की सहमति के पश्चात् ही वित्त मंत्री बजट लोकसभा में प्रस्तुत करता है। अन्य वित्त विधेयकों को भी मंत्रिमण्डल ही लोकसभा में प्रस्तुत करता है।
4. **वैदेशिक संबंधों पर नियंत्रण –** वैदेशिक मामलों में मंत्रिमण्डल का पूर्ण नियन्त्रण होता है। विदेशी राज्यों के अध्यक्षों या सरकारों के साथ सभी वार्ताओं का संचालन प्रधानमंत्री या विदेश मंत्री या प्रधानमंत्री के किसी अन्य प्रतिनिधि द्वारा किया जाता है। जब वार्ताओं के परिणामस्वरूप कोई संधि या समझौता हो जाता है, तो संसद को उनके सम्बन्ध में सूचना दे दी जाती है और यदि आवश्यकता हुई, तो संसद से उसकी स्वीकृति प्राप्त कर ली जाती है।
5. **नियुक्ति संबंधी कार्य –** मंत्रिमण्डल के परामर्श से ही संसद के दोनों सदनों के मनोनीत सदस्य नियुक्त किए जाते हैं। राज्यों के राज्यपाल, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, महाधिवक्ता, महालेखा परीक्षक और सेना के प्रमुखों की नियुक्ति मंत्रिमण्डल के परामर्श से ही की जाती है।

अथवा

28. लोकसभा तथा राज्यसभा के मध्य तुलना कीजिए एवं दोनों का पारस्परिक संबंध बताइए। 7

उत्तर :

लोकसभा को **लोकप्रिय सदन** और राज्यसभा को **वरिष्ठ सदन** भी कहा जाता है। इन दोनों सदनों की शक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन या आपसी संबंधों का अध्ययन निम्न प्रकार किया जा सकता है–

रचना के संबंध में– लोकसभा भारत की समस्त जनता का प्रतिनिधित्व करती है, राज्यसभा भारतीय संघ की इकाइयों अर्थात् राज्य और संघीय क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती है लेकिन राज्यसभा में भारतीय संघ के सभी राज्यों को समान प्रतिनिधित्व प्रदान नहीं किया गया है।

लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 और राज्यसभा की अधिकतम संख्या 250 हो सकती है। वर्तमान में इन दोनों सदनों की सदस्य संख्या क्रमशः 545 और 245 है।

लोकसभा के सदस्यों का चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर और प्रत्यक्ष निर्वाचन के तरीके से होता है। राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष रीति से और आनुपातिक प्रतिनिधित्व की पद्धति के आधार पर होता है। लोकसभा का कार्यकाय 5 वर्ष है, जबकि राज्यसभा एक स्थायी सदन है लेकिन इसके सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष है।

साधारण विधेयकों के संबंध में– साधारण विधेयकों के संबंध में सैद्धान्तिक दृष्टि से दोनों सदनों की शक्तियां समान हैं लेकिन व्यवहार में राज्यसभा की स्थिति कमजोर है। जब किसी साधारण विधेयक के संबंध में दोनों सदनों में मतभेद उत्पन्न हो जाता है या राज्यसभा 6 महीने तक विधेयक पर कोई कार्यवाही नहीं करती तब दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुलाकर बहुमत के आधार पर उस विधेयक पर निर्णय होता हैं। संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करता है। लोकसभा की सदस्य संख्या राज्यसभा की दुगनी से भी अधिक होने के कारण संयुक्त बैठक में लोकसभा की इच्छानुसार निर्णय होने की सम्भावना अधिक रहती है। इस प्रकार व्यवहार में राज्यसभा साधारण विधेयक को 6 महीने तक रोके रखने का कार्य ही कर सकती है।

वित्तीय विधेयक के संबंध में– सिद्धान्त और व्यवहार दोनों ही रूपों में लोकसभा अधिक शक्तिशाली है। वित्त विधेयक लोकसभा में ही प्रस्तावित हो सकते हैं और राज्यसभा अधिक–से–अधिक 14 दिन तक ऐसे विधेयक पर विचार कर सकती है। 14 दिन की अवधि में भी वह इस संबंध में निर्णयकारी स्थिति में नहीं है।

कार्यपालिका (मंत्रिपरिषद) पर नियंत्रण के संबंध में– इस संबंध में भी लोकसभा ही अधिक शक्तिशाली है। प्रश्न, पूरक प्रश्न और आलोचना का अधिकार दोनों सदनों को है लेकिन अविश्वास प्रस्ताव के आधार पर मंत्रिपरिषद को पदच्युत करने का अधिकार केवल लोकसभा को प्राप्त है।

राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव तथा उनके विरुद्ध महाभियोग और आपातकाल की घोषणा को स्वीकृति देने के संबंध में दोनों सदनों की शक्ति समान है।

इस प्रकार अधिकांश मामलों में लोकसभा राज्यसभा की तुलना में अधिक शक्तिशाली है।

29. राज्य मंत्रिपरिषद् के गठन का वर्णन कीजिए। 6

उत्तर :

राज्य मंत्रिपरिषद् का गठन– संविधान के अनुसार राज्यपाल को शासन कार्य में सहायता और सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद् की व्यवस्था की गई है। इसका प्रधान मुख्यमंत्री होता है। राज्यपाल तो वैधानिक प्रमुख मात्र होता है। शासन की सम्पूर्ण सत्ता मंत्रिपरिषद् में निहित होती है। मंत्रिपरिषद् के गठन को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है–

1. **मुख्यमंत्री की नियुक्ति –** अनुच्छेद 164 में कहा गया है कि मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल करेगा और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति राज्यपाल मुख्यमंत्री की परामर्श से करेगा। इस संबंध में निश्चित परम्परा यह है कि राज्य की विधानसभा में 'बहुमत दल' के नेता को राज्यपाल मुख्यमंत्री पद पर नियुक्त करता है।
2. **मंत्रियों का चयन –** मंत्रियों की नियुक्ति मुख्यमंत्री के परामर्श पर राज्यपाल द्वारा ही की जाती है। मुख्यमंत्री अपने मंत्रियों की एक सूची तैयार करता है और उस सूची के अनुरूप राज्यपाल मंत्रियों को नियुक्त करता है। मंत्रियों के विभागों का बँटवारा मुख्यमंत्री ही करता है। राज्यपाल मुख्यमंत्री के कहने पर सम्बन्धित आदेश जारी करता है।

अब तक मंत्रिपरिषद् का आकार मुख्यमंत्री की विवेकाधीन

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएेंगे।

शक्तियों के अन्तर्गत था, किन्तु संविधान के 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के व्यवस्थापन के पश्चात् राज्य की मंत्रिपरिषद् में मुख्यमंत्री सहित अन्य मंत्रियों की कुल संख्या राज्य विधानसभा के सदस्यों की संख्या के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। यह अधिनियम जुलाई 2004 से प्रभावी हो गया है।

3. **मंत्रियों की योग्यताएँ –**
   (a) वह भारत का नागरिक हो।
   (b) उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो।
   (c) वह विधानमण्डल का सदस्य हो।
   (d) वह राज्य के किसी सरकारी पद पर न हो।
   (e) यदि मंत्री पद पर नियुक्ति के समय वह विधानमण्डल के किसी भी सदन का सदस्य नहीं है तो अधिक–से–अधिक 6 माह की अवधि में उसे विधानमण्डल की सदस्यता प्राप्त करनी होती है।
4. **मंत्रियों का कार्य–विभाजन –** राज्यपाल मुख्यमंत्री के परामर्श से विभिन्न मंत्रियों के बीच कार्यों का विभाजन करता है। जैसे कृषि विभाग, वित्त विभाग, शिक्षा विभाग व स्वास्थ्य विभाग आदि। प्रत्येक मंत्री को एक या एक से अधिक विभाग का कार्य सौंप दिया जाता है।
5. **मंत्रियों द्वारा शपथ ग्रहण –** राज्य की मंत्रिपरिषद् के समस्त सदस्य अपना पद ग्रहण करने से पूर्व राज्यपाल के सम्मुख संविधान के प्रति श्रद्धा एवं निष्ठापूर्वक कार्य करने की शपथ ग्रहण करते हैं।
6. **मंत्रियों की श्रेणियाँ –** केन्द्र सरकार के समान राज्य सरकार में भी तीन प्रकार के मंत्री होते हैं– (a) केबिनेट मंत्री, (b) राज्य मंत्री, (c) उपमन्त्री। केबिनेट स्तर के मंत्रियों (मुख्यमंत्री सहित) को सामूहिक रूप से 'मन्त्रिमण्डल' या 'केबिनेट' कहते है और उपरोक्त तीनों ही स्तरों के मंत्रियों को सामूहिक रूप से मंत्रिपरिषद् कहा जाता है।

अथवा

29. प्रधानमंत्री के कार्य एवं अधिकारों का वर्णन कीजिए? 6

उत्तर :

प्रधानमंत्री लोकसभा का, मंत्रिपरिषद् का, सरकार का तथा देश का नेता होता है। सम्पूर्ण देश की बागडोर वस्तुतः उसी के हाथ में रहती है। उसे अनेक महत्त्वपूर्ण अधिकार प्राप्त होते हैं। प्रधानमंत्री के कार्य तथा अधिकार निम्न हैं:

1. **मंत्रिपरिषद् का निर्माण –** प्रधानमंत्री ही मंत्रिपरिषद् का निर्माण करता है। राष्ट्रपति प्रधानमंत्री को चुनता है तत्पश्चात् प्रधानमंत्री अपने इच्छित व्यक्तियों के नाम की सूची राष्ट्रपति के पास भेजता है। सामान्यतया राष्ट्रपति इस पर अपनी स्वीकृति दे देता है, तब प्रधानमंत्री अपनी मंत्रिपरिषद् बनाकर विभिन्न मन्त्रियों को विभागों की जिम्मेदारी सौंपता है। प्रधानमंत्री चाहे तो ऐसे व्यक्ति को भी मन्त्री बना सकता है जो संसद का सदस्य नहीं है परन्तु उसे मन्त्री बने रहने के लिए आवश्यक है कि वह अगले छः माह के भीतर संसद के किसी सदन की सदस्यता ग्रहण कर ले। मंत्रिपरिषद् को बनाना, समाप्त करना या मन्त्रियों की संख्या कम अथवा अधिक करना आदि प्रधानमंत्री का ही कार्य है।
2. **कार्यपालिका का प्रधान –** देश की वास्तविक कार्यपालिका शक्ति मन्त्रिपरिषद् के हाथ में रहती है। इस प्रकार प्रधानमंत्री संघीय कार्यपालिका का मुख्य अंग और शासन का मुखिया है। स्वयं संविधान ने उसे मंत्रिपरिषद् का नेता स्वीकार किया है।
3. **शासन का प्रधान –** प्रधानमंत्री देश के शासन का प्रधान प्रबन्धक होता है क्योंकि वही देश के शासन को विभिन्न विभागों में बांटता है और उन विभागों की जिम्मेदारी अपनी इच्छा और उनकी योग्यता के अनुसार विभिन्न मन्त्रियों को सौंपता है। उनकी नीतियों को निर्धारित करता है। किसी भी विभाग की गम्भीर भूल के लिए प्रधानमंत्री को ही दोषी ठहराया जाता है।
4. **मन्त्रिमण्डल (केबिनेट) का प्रधान –** प्रधानमंत्री मन्त्रिमण्डल का प्रधान होता है क्योंकि वही मन्त्रिमण्डल की बैठकों का समय और विचार के विषय निश्चित करता है और बैठकों में सभापति का पद सम्भालता है। बैठक के समय उठे किसी विवाद को वही सुलझाता है। यदि किसी मन्त्री की राय प्रधानमंत्री से नहीं मिलती तो ऐसी स्थिति में प्रधानमंत्री उसे त्यागपत्र देने के लिए बाध्य कर सकता है।
5. **लोकसभा का नेता –** प्रधानमंत्री लोकसभा का नेता भी होता है, क्योंकि लोकसभा में प्रमुख नीतियों की घोषणा, उसकी बहसों का सूत्रपात तथा लोकसभा की कार्यवाही के संबंध में सभी महत्वपूर्ण घोषणाएं प्रधानमंत्री द्वारा ही होती हैं। प्रधानमंत्री की एक महत्वपूर्ण शक्ति राष्ट्रपति को परामर्श देकर लोकसभा को भंग करवाना है।
6. **मंत्रिपरिषद् और राष्ट्रपति के बीच की प्रमुख कड़ी –** प्रधानमंत्री मंत्रिपरिषद् और राष्ट्रपति के बीच की प्रमुख कड़ी है। उसी के द्वारा मंत्रिपरिषद् की नीतियों एवं निर्णयों आदि की जानकारी राष्ट्रपति को नियमित रूप से दी जाती है और राष्ट्रपति प्रधानमंत्री के माध्यम से ही अपना परामर्श मंत्रिपरिषद् को भेजता है। प्रधानमंत्री समय–समय पर राष्ट्रपति से भेंट करता है।
7. **राष्ट्र का प्रधान नायक –** प्रधानमंत्री देश या राष्ट्र का प्रधान नायक होता है। देश के शासन की सम्पूर्ण बागडोर उसी के हाथ में रहती है। उसे अनेक महत्त्वपूर्ण अधिकार प्राप्त होते हैं। जनता देश की प्रगति के लिए उसी की ओर देखती है। राष्ट्र का प्रधान नायक होने के कारण वह देश का नेतृत्व करता है।

30. 1. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को अंकित कीजिए– 5
   (a) अमृतसर
   (b) चंपारण
2. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्न अंकित कीजिए–
   (a) मरुस्थलीय मृदा का क्षेत्र
   (b) गौंडवाना कोयला क्षेत्र
   (c) मुम्बई बन्दरगाह

उत्तर :

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

□□□□□□□

सभी गुरुजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएँगे।